निर्गुण साहित्य परंपरा में अलखदास का योगदान

(जामिया मिल्लिया इस्लामिया की पी० एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत सारांश)

निर्देशक
डॉ० कृष्ण कुमार कौशिक

सह निर्देशक
डॉ० वहाजुद्दीन अलवी (उर्दू विभाग)

शोधकत्री
रख़शंदा रूही

हिन्दी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली ११००२५
२००९

निर्गुण साहित्य परंपरा में अलखदास का योगदान

मध्ययुगीन भारत की सामाजिक राजनैतिक धार्मिक स्थितियां विषम थीं।उस समय अनेक तरह की कुप्रथाएं व्याप्त थीं। विभिन्न धर्मों तथा मतों के टकराव में देश'जाति धर्म के इतिहास में परंपरागत मान्यताएं अपना मूल्य खो रही थीं।ऐसी स्थिति में उन क्षीण होती परम्पराओं का पल्ला पकड़े रखने में देश के सामाजिक सांस्कृतिक विकास का रास्ता अवरूद्घ हो रहा था।उस समय समयोचित परिवर्तन उन परम्पराओं के लिए जीवनदायक सिद्घ हुआ जिसमें निर्गुण भक्ति की वैदिक धारा के पुनर्जीवन तथा प्रचार का सेहरा सूफी संतों के सिर बंधता है।इनकी सहज तथा समानता से पूर्ण मृदुल वाणी ने भक्ति धारा को एक नए मादक रूप में प्रवाहित किया।

सूफीमत अरब में जन्मा फारस में विकसित हुआ।भारत आने पर सूफीमत में वैचारिक उदारता का भाव जागृत हुआ क्योंकि अन्य धर्मों से उसे मुक़ाबला करना पड़ रहा था।

सूफियों के विभिन्न संप्रदाय भारत में प्रसिद्घ हुए जिनमें मुख्यतः

१ चिश्ती २का.दरी ३ सुहरावर्दी ४नक्.शबंदी हैं।

चिश्ती सिलसिले को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त हुई।जिसमें दीक्षित महानतम सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती तथा निज़ामुद्दीन औलिया ने इस सम्प्रदाय का नाम भारत में रोशन किया तथा प्रेम और मानवता का संदेश दिया।

जन साधारण में अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही के नाम से लोकप्रिय महान सूफी संत अलखदास चिश्ती संप्रदाय में दीक्षित थे।हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया से बहुत अधिक अक़ीदत रखते थे। इन्होंने १६ ग्रंथों की रचना की है जिनमें से मात्र पांच छः ही उपलब्ध हैं।इनके रुश्दनामा ग्रंथ में फारसी और अवधी काव्य का संकलन है। 'निर्गुण साहित्य परंपरा में अलखदास का योगदान' विषय पर शोध कार्य द्वारा मैंने उपेक्षित सूफी संत अलखदास को हिन्दी साहित्य से जोड़ने का प्रयास किया है ।

सूफी संत अलखदास का जन्म रूदौली उत्तरप्रदेश में सन १४५६ ई० में एक विद्वान परिवार में हुआ । बचपन में शिक्षा ग्रहण की परन्तु विशेष रूचि न होने पर पारंपरिक शिक्षा त्याग दी । गहरी श्रद्धा से मन में भगवान का स्मरण करते थे । बाल्यावस्था में ही उन्होंने छोटी पुस्तकों की रचना की । विवाह करने का उनका मन न था पर सूफी वैरागी नहीं होता, अतः उन्होंने विवाह कर सम्पूर्ण जीवन ईष्ट देव को अर्पण

कर दिया । परिवार का ध्यान रखना भी अवश्यक समझा तथा खेती बाड़ी को अपनी जीविकोपार्जन का ज़रिया बनाया । वे धन संचय न करने पर बल देते। स्वयं इतना ही धन कमाते जिसमें दो वक्त रूखी सूखी मिल जाए ।

सूफी परंपरा के अनुसार गुरू-शिष्य प्रणाली पर चलते हुए शेख आरिफ से दीक्षित हुए परन्तु उन्होंने आध्यात्मिक गुरू शेख़ अब्दुल हक़ को माना जो उनके गुरू के दादा थे । गुरू शेख अहमद अब्दुल हक़ की सूफी परंपराओं पर उन्हें बहुत गर्व था।

उनके पत्रों का संकलन एवं संपादन उनके पुत्र शेख रूक्नुद्दीन ने किया है। इन पत्रों में फारसी भाषा का प्रयोग है तथा अवधी भाषा में बड़ी सजीव कविता स्थान स्थान पर चित्रित है जो उनके फारसी भाषा के साथ हिंदवी भाषा के पूर्ण ज्ञान की परिचायक है । उन्होंने चंदायन का फारसी अनुवाद भी किया जो राजनैतिक उथल पुथल की भेंट चढ़ गया।

उनके हिन्दवी भाषा में रचित दोहे, चौपद, कविताएं उनके पत्रों के अलावा उनके महत्वपूर्ण दार्शनिक ग्रन्थ 'रूश्दनामा' में संकलित हैं । उन्होंने सूफी दर्शन के शुद्ध रूप तथा प्रेम भक्ति द्वारा हिन्दी साहित्य को एक नई विचारधारा से अवगत कराया, जो इश्क़े-मजाज़ी एवं इश्क़े-हक़ीक़ी की सीढ़ियों से गुज़रती हुई परमात्मा में विलीन हो गई।वे इब्ने अरबी द्वारा प्रदत्त 'वहदतुलवुजूद' दार्शनिक मत के प्रबल समर्थक थे। 'हुमा ऊस्त' (सब कुछ वही है) यही उनका विश्वास एवं उनकी आस्था है । रहस्यवादी अद्वैत भावना ने इनके मन पर अपना आधिपत्य कर लिया है।वे दार्शनिक हैं' पर इस्लामी शरीअत से बाहर किसी कार्य को करने का साहस नहीं करते। समा' को मन के विचारों की अभिव्यक्ति का साधन मानते थे और समा का विशेष प्रयोजन कराते थे ।समा के अवसर पर अमीर खुसरो के हिन्दवी दोहे पढ़ते जाते और भावाविष्ट हो अपने को भूल जाते।

सूफी अलखदास परमात्मा के नूर को जग के हर ज़र्रे में व्याप्त पाते हैं फिर अल्लाह के बंदों को दुखी करने की तो वे कल्पना भी नहीं कर सकते।उन्होंने सभी धर्मों के मानने वालों को एक ही बाग़ के रंग रंग के फूल कहा है।

अलखदास भगवान के अनन्य भक्त हैं।उनका कवि रूप गौण है।उनकी सरल सरस भाषा में भाषा सौन्दर्य स्वतः स्फुटित है।अलखदास ने रहस्यवादी अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों का सुन्दर एवं सहज प्रयोग किया है।उन्होंने रूपकों तथा अन्योक्तियों द्वारा अभिव्यक्ति की है।उनके काव्य में प्रकृतिपरक' परंपरागत' पारिभाषिक' मानवीय प्रतीक बहुतायात से मिलते हैं।उनकी कविता में सबद'दोहरा' चौपद'उक्दा' श्लोक' चौपाई एवं रेख़्ता का प्रयोग है।यदा कदा संस्कृत के श्लोक भी इनकी पुस्तक रुश्दनामा में मिलते

हैं।अलखदास की अभिव्यक्ति कलात्मक अभिव्यंजना को दृष्टि में रख कर नहीं की गई है बल्कि उनके मनःभावों की सच्ची आवाज प्रतीत होती है।स्वाभाविक रूप से अलखदास की भाषा में अलंकारों का समावेश हो गया है।मुख्यतः उपमा'रूपक दृष्टांत आदि के सुन्दर उदाहरण उनके काव्य को कोमलता प्रदान करते हैं।

अलखदास भारत के महान संतों में से हैं किन्तु आश्चर्य की बात है कि हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास चतुर्थ भाग और डा० नगेन्द्र द्वारा संपादित हिन्दी साहित्य का इतिहास के अतिरिक्त अलखदास का कहीं उल्लेख नहीं मिलता ।

हिन्दी साहित्यकारों के ग्रंथों में भी अब्दुल क़ुद्दूस 'अलखदास' के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती है ।हिन्दी साहित्य ने भले ही उन्हें अपने दायरे में स्थान न दिया हो पर उनकी रचनाओं से पता चलता है कि उनका काव्य निर्गुण साहित्य की सूफी विचारधारा के अन्तर्गत आता है। निर्गुण परंपरा के सफल कवि के रूप में उनका नाम उल्लेखनीय है।

अतः अलखदास को हिन्दी साहित्य में एक प्रतिष्ठित स्थान अवश्य मिलना चाहिए एवं निर्गुण परंपरा के सफल कवि के रूप में उनका मूल्यांकन होना चाहिए ।